यह पुस्तक के. के. बिड़ला फाउंडेशन के अनुदान से तैयार की गयी है।

ISBN 81-237-1249-9

पहला संस्करण : 1995
दूसरी आवृत्ति : 2000 (शक 1922)

KHEMI (*Hindi*)
रु. 5.00
निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

नवसाक्षर साहित्यमाला

खेमी

रामनारायण पाठक 'द्विरेफ'

रूपांतर और अनुवाद

वर्षा दास

चित्र

स्वपन सरकार

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया



धनिया ने पांचवी तीली जलाई। पर उसकी बीड़ी नहीं सुलग पायी। तब उसकी घरवाली खेमी ने उसे टोका। "अरे, कितनी दियासलाई बिगाड़ोगे? एक डिबिया दो दिन तो चले!"

"देखो ना, हवा कितनी तेज है। तीली जल ही नहीं रही है।" धनिया ने नयी तीली निकाली।

"ये लो, मैं आंचल की आड़ देती हूं।" खेमी ने आंचल को लंबा खींचा। धनिया के सामने हवा को रोका। धनिया ने दियासलाई जलायी। धनिया अपनी घरवाली का रूप निहार रहा था।

आज धनिया के एक सेठ के यहां दावत थी। धनिया और खेमी इस खुशी में शौचालय की सीढ़ी पर बैठे थे। धनिया ने बीड़ी का एक कश लगाया। बोला, "खेमी, तुम्हारी मां की कुछ भी मांग होती। पर शादी तो मैं तुमसे ही करता।"

"लेकिन मेरी मां ने क्या तुमसे एक पाई भी ली है? मैं तो तुम्हारे घर में लेकर ही आई हूं।" खेमी ने कहा।

"तेरी मां तो बहुत भली है। लेकिन तुम ना जाने कैसे इतनी बुरी निकली !"

"यह लो, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?"

"तुमने शादी से पहले कितने नखरे किये ? तुम शराब नहीं पिओगे। तुम गाली नहीं दोगे। तुम हाथ नहीं उठाओगे। तब ही विवाह करूंगी। यदि किसी दिन ऐसा होगा तो छोड़ कर चली जाऊंगी। क्या ऐसा भी होता है ?"

"क्यों नहीं होता ? शराब पीकर उधम मचाना। न बोलने वाली बात बोलना। ये सब मैं नहीं सह सकती। मार खाने वाली होगी कोई और !"

खेमी की बातें सुन धनिया धीमा पड़ गया। बोला, "ठीक है। पर मैं कहां पीने जाता हूं जो तब इतने जोश में बोलती हो ! तुम जब छोटी थी, तुम अपनी मां के साथ सड़क पर झाड़ू लगाने जाया करती थी। तब से तुम मुझे अच्छी लगती हो।"

खेमी ने पूछा, "लेकिन धनिया, तुम लोग शराब क्यों पीते हो ? इसमें ऐसा भला क्या है ? तुम तो कहते थे कि शराब कड़वी लगती है !"

"खेमी, कभी कभी मन नहीं लगता। तब शराब चाहिये। कभी थक जाता हूं। कुछ अच्छा नहीं लगता। तब पीने से ठीक हो जाता हूं।"

खेमी थोड़ी देर चुप रही। उसे अपने बारे में अधिक सुनने का मन किया। उसने पूछा, "बता तो धनिया। मेरा

विवाह कहीं और हो जाता तो ?"

"अरे, किस की मां ने सवा सेर सौंठ खाई है, जो तुमसे विवाह करता ! मैं तो तुझे कहीं से भी उठा ले आता ।"

खेमी बोली, "अब रहने भी दो । इतना अभिमान मत करो । इस दुनिया में सेर के सवा सेर भी होते हैं ।"

अचानक दावत में शोर होने लगा । एक कुत्ता घुस आया था । उसने किसी के खाने को छू लिया था । उसे बाहर खदेड़ा जा रहा था । सेठ चिढ़ गया । उसने सारा गुस्सा धनिया पर निकाला । "हाथ में बीड़ी लिये लपटन बन बैठा है ! कुत्ते को भगा नहीं सकता ? उठ यहां से. . . ।" बस, सेठ ने मारा नहीं था ।

धनिया और खेमी को बहुत बुरा लगा । उनके रंग में भंग पड़ गया । दोनों कुछ नहीं बोले । उठकर चल दिये । कहां जाना है, वे नहीं जानते थे ।

धनिया को अधिक बुरा लगा था । खेमी उसे समझाने लगी । धनिया ने अपने मन की असल पीड़ा बता दी, "उसने इतना कुछ सुना दिया । वह भी तुम्हारे सामने । मुझसे सहा नहीं गया ।"

खेमी सोच में पड़ गयी । उसी ने धनिया को बातों में लगाया था । अधिक अपमान तो धनिया का ही हुआ था । यह बात खेमी को चुभी । धनिया गमगीन था । चुपचाप चल रहा था । यह देखकर खेमी का दिल दुखी था ।

राह में दारू का ठेका मिल गया । खेमी को याद आया ।

जब धनिया का मन न लगे, तब शराब पीने से वह ठीक हो जाता है। खेमी ने आंचल की गांठ से आधा रुपया निकाला। धनिया को प्यार से देते हुए वह बोली। "अब कब तक यूं चुप रहोगे? वहां जाकर शराब पी लो। जल्दी लौट आना। मैं यहीं खड़ी हूं।" धनिया खुश होकर चला गया।

खेमी राह ताकती रही। वह सोचने लगी, उसी ने शराब न पीने की कसम ली थी। अब खुद ही शराब के लिए पैसे दे रही है। यह ठीक नहीं किया। इतने में धनिया आ गया। वह खुश दिख रहा था। धनिया बोला, "खेमी, देखो, मैं ठीक हो गया हूं। शराब से मैं ठीक हो जाता हूं। मैंने कहा था ना?"

खेमी बोली, "अब यह बात छोड़ो। लेकिन खबरदार। अगर दुबारा पी तो घर से बाहर निकाल दूंगी।"

"नहीं खेमी, कभी नहीं पीऊंगा। तुम मुझे बहुत अच्छी लगती हो। सेठ की दावत गयी भाड़ में। मैं शराब पीता हूं। लेकिन मुझे कभी नहीं चढ़ती। चाहे कितनी भी पी लूं। मैं तुम्हें नहीं मारूंगा। तुम मुझे बहुत प्यारी हो।"

धनिया बड़बड़ा रहा था। खेमी चुपचाप उसे घर ले गयी।





(2)

शाम का समय था। खेमी झाड़ू लगा रही थी। वह अहमदाबाद में नहीं थी। धनिया भी उसके साथ नहीं था। धनिया को उसने कोई छह महीने पहले छोड़ दिया था। धनिया बुरी सोहबत में पड़ गया था। वह सोचता था कि खेमी सह लेगी। इसी विश्वास से शराब पीने लगा था। उसने यह भी सोचा कि शर्त मानना यानि कमजोरी दिखाना होगा। खेमी ने उसे कई बार धमकाया। तिरस्कार किया। उसे छोड़ कर चले जाने की धमकी दी। लेकिन धनिया ने धमकी की कभी परवाह नहीं की।

एक दिन धनिया खूब शराब पी कर आया। बोला, "किसे छोड़ कर जाओगी?" यूं रौब दिखा कर उसने खेमी को मारा। अगले ही रोज खेमी चली गयी। वह अपने मायके नड़ियाद आ गयी। वहां अपने वेतन से परसोत्तम नाम के बाबू को घूस देने का तय किया। और खेमी झाड़ू लगाने की नौकरी करने लगी।

नड़ियाद में खेमी को मनमौजी माना जाता था। पर इस बार उसके दिल में धनिया को छोड़ने का कांटा चुभ रहा था। अहमदाबाद से आने वाले सभी लोगों से वह धनिया के बारे में पूछती। वह जानती थी कि वह धनिया के पास लौट सकती है। धनिया उसे प्रेम से रख लेगा। लेकिन खेमी ने ठान लिया था। वह धनिया के बगैर बुलाए नहीं जायेगी। धनिया उसे बुलाए इसके लिए उसने मनौतियां मान रखी

थीं। फिर भी धनिया का बुलावा नहीं आया। इससे खेमी निराश थी। निराशा के कारण वह चिढ़ जाती थी। सारा गुस्सा वह परसोत्तम पर निकालती थी। वह परसोत्तम को चिढाती थी। उस पर गाना बनाती थी।

एक दिन खेमी और मंगी झाड़ू लगा रही थीं। साथ में गीत गा रही थीं। तभी परसोत्तम आ पहुंचा। वह हाथ में पतली छड़ी लिए था। वह छड़ी को जूते पर मारता हुआ चल रहा था। उसने गाना सुना। वह समझ गया कि गीत उसी के लिए था। वह चिल्लाया, "ऐ हरामखोर! काम करो काम! गला क्यों फाड़ रही हो?"

मंगी झेंप गयी। लेकिन खेमी ने जवाब दिया, "हां, गा रहे हैं। लेकिन दिखता है कि नहीं? हमारे हाथ तो चल रहे हैं।"

"हरामखोर, मुझे जवाब देती है? अपने अफसर का अपमान कर रही है? मुंह चलाती है?" परसोत्तम भड़क उठा।

"पर भाई साहब..."

"बस करो, हमें और भी काम हैं। इस पर अंगूठा लगाओ। तुम्हें वेतन दे दूं।" उसने सामने चबूतरे पर कागज रखे। पहले मंगी ने अंगूठा लगाया। फिर उसने खेमी को अंगूठा लगाने को कहा।

खेमी बोली, "पहले मुझे पैसा दो। बाद में अंगूठा लगाऊंगी।"



"क्या तुम साहूकार और सरकार चोर ? काम सरकारी नियम से ही होगा । पहले अंगूठा लगाओ । बाद में वेतन मिलेगा ।"

"तो लो यह अंगूठा ।" यह कहकर खेमी ने परसोत्तम को अंगूठा दिखाया । बाद में कागज पर अंगूठा लगाया । परसोत्तम ने खेमी और मंगी के वेतन से आधा रुपया काट लिया । बाकी के रुपये उसने नीचे फेंक दिये । मंगी ने अपने पैसे उठा लिये । खेमी बोली, "मुझे पूरे पैसे दो । तब ही लूंगी । नहीं तो नहीं लूंगी ।"

"नहीं लोगी तो जमीन पर पड़े रहने दो । मैं तो चला ।" कह कर परसोत्तम चलने को हुआ । खेमी ने लंबा बुहारा सामने की दीवार पर लगा दिया । उसका रास्ता रोक लिया ।

परसोत्तम को लगा कि खेमी के सामने उसकी नहीं चलेगी । दूसरों के सामने वह नीचा दिखेगा । वह बोला, "यह ले तेरे पैसे । वह आधा लौटा दे ।"

खेमी ने कहा, "पहले रुपया दो । तब यह दूंगी ।"

परसोत्तम ने रुपया नीचे फेंका । खेमी ने बुहारा हटा लिया । झुक कर पैसे उठा लिये । दूसरों की ओर देखने लगी । रुपये खनखनाने लगी । इतने में एक आवाज आयी । "खेमी, अरी ओ खेमी ।"

खेमी ने देखा । उसकी सास उसे बुलाने आई थी ।

(3)

पहले तीन दिन धनिया और खेमी बड़ी खुशी से रहे। चौथे दिन धनिया ने खेमी से कहा, "खेमी, तुम सचमुच कड़े दिल की हो। मुझे यहां कुछ सुहाता नहीं था। और तुम वहां मौज मारती थी।"

खेमी बोली, "मुझे भी सुहाता नहीं था। लेकिन जब तक तुम नहीं बुलाते, मैं कैसे आ सकती थी?"

"मैं तुम्हें कैसे बुलाता? दोष तो मेरा था। मां कहती थी कि एक-दो दिन में लौट आयेगी। कितने दिन रहेगी? लेकिन तुम तो बात पर अड़ी थी!"

"दोष तुम्हारा था। तुम्हें ही बुलाना चाहिए था!"

"मैंने कितनी मनौतियां मानी थीं। मां दूसरी शादी की कहती थी। पर मैंने कहा, 'मैं तो खेमी आए तो ही मानूंगा। नहीं तो नहीं।' तब मेरी मां तुझे बुलाने गयी।" धनिया ने कहा।

खेमी बोली, "मैंने भी कितनी मनौतियां मानीं। तब कहीं तुम्हारी मां बुलाने आयी।"

धनिया चौंक गया। बोला, "अरे! खेमी, तुमने बहुत बुरा किया। मेरी मनौती के पचास रुपये हुए। तुम्हारी मनौती के साठ रुपये हो गये। विवाह का भी अभी दो-ढ़ाई सौ बकाया है। इतना सारा पैसा कैसे भरेंगे?"

खेमी भी डर गयी। फिर भी उसने धनिया को हौंसला दिया।

धनिया हताश हो कर सो गया । खेमी भी चिंता लिए सो गयी । फिर तीन दिन का सुख गुम हो गया । दोनों फिर से दुखी संसार में डूब गये ।

दूसरे दिन खेमी ने गहने निकाले । बेचने के लिए । धनिया ने गहने गिरवी रखे । गिरवी रखने से पैसे कम मिले । बाद में सारे गहने सूद में डूब गये । धनिया और खेमी यह बात समझ ना सके । तभी धनिया की मां मर गयी । खेमी को बच्चा हुआ । खरचा बढ़ गया । खेमी का कमाना बंद हो गया । धनिया चिंता से छूटने के लिए शराब की ओर मुड़ गया ।

खेमी ने धनिया को धमकाया । इस धमकी में नफरत नहीं थी । दया थी । खेमी को लगा कि धनिया की यह हालत उसी के कारण हुई है । एक रात धनिया घर नहीं लौटा । खेमी उसे फुटपाथ पर से तलाश कर घर लायी । अब खेमी का दिल केवल पिघलता था । सीख देने जैसा दम अब उसमें नहीं रहा ।

एक रात कड़ाकेदार जाड़ा था । धनिया घर नहीं लौटा । खेमी धनिया को तलाशने निकली । दो घंटे बाद उसने धनिया को देखा । वह नदी की रेत में पड़ा था । खेमी उसे उठाकर धीरे धीरे घर ले आयी । धनिया को बुखार चढ़ा । खेमी ने फिर से मनौतियां मानीं । ओझा बुलाया । लेकिन खेमी का धनिया दुबारा नहीं उठा । खेमी विधवा हो गयी ।



एक दिन खेमी सड़क झाड़ रही थी । सामने के चबूतरे पर एक आदमी था । उस आदमी ने चबूतरा साफ किया । वहां आसन बिछाया । उसके पास चित्र, पोथी और पांसा थे । खेमी ने उस आदमी से कहा, "महाराज, मुझे एक सवाल पूछना है ।"

"तो चार आने नीचे रखो ।" महाराज ने जवाब दिया ।

खेमी ने चवन्नी रखी और पूछा, "महाराज, किसी का पति मर गया हो । उसकी मनौतियां रह गयी हों । यदि उसकी पत्नी मनौतियां पूरी करे तो उस तक पहुंचेगी या नहीं ? महाराज, ठीक से देखना ।"

महाराज ने उंगली के पोर पर गिना । फिर कहा, "हां ।"

"ठीक है महाराज ।" कहकर खेमी चलने लगी । महाराज ने उसे वापस बुलाकर कहा, "लेकिन वह दूसरा विवाह कर ले तो नहीं पहुंचेगी ।" खेमी उसको प्रणाम करके चली गयी ।

अब खेमी मनौतियां पूरी करने के लिए पैसे बचाने लगी । कई आदमियों ने उससे विवाह करने की कही । खेमी ने सभी को एक ही जवाब दिया, "जब तक धनिया की मनौतियां पूरी नहीं होती, मैं विवाह नहीं कर सकती ।"

धनिया की मनौतियां खेमी ने पूरी तो कर लीं । पर उसमें पूरे सात साल लग गये । एक आदमी ने उसे फिर से विवाह करने को कही । खेमी ने जवाब दिया, "नहीं ! नहीं ! अब इस उमर में मुझे अपने जीवन पर थीगड़ा नहीं लगाना ।"

शिवम् ऑफसैट प्रेस, ए-12/1, नरायणा इंडिस्ट्रियल एरिया, फेज-I, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित

